दैनिक भास्कर

16-Oct-2019
बीकानेर Page 15

राजस्थानी के युवा लेखकों को बिना रूके समझ के साथ लिखते हुए आगे बढ़ने की जरूरत : आचार्य

भास्कर न्यूज | सालासर

सावरथिया सेवा सदन में साहित्य अकादमी दिल्ली व मरूदेश संस्थान की ओर से दो दिवसीय युवा लेखक सम्मेलन का समापन मंगलवार को हुआ।

मरूदेश संस्थान अध्यक्ष डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा ने बताया कि तीन सत्रों में हुए समापन समारोह के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीगंगानगर से आए युवा साहित्यकार सत्यपाल जोईया ने की। जैसलमेर के युवा कवि राम लखारा विपुल ने राजस्थानी गजल मन म्हारो उड़तो कागद हो.., थारी नैण उधारी... व ओ लूणी रे गीत की प्रस्तुति दी। नोहर के युवा कहानीकार शिव बोधि ने कारु कहानी से ग्रामीण परिवेश से रूबरू करवाया। सुजानगढ़ के युवा कवि अरविंद विश्वेंद्रा ने चिड़कली मत आइजे रे सहित बेटियों की महत्ता पर प्रस्तुति दी। राजस्थानी भाषा के साहित्य पर केंद्रित द्वितीय सत्र की

अध्यक्षता कालू से आए राजस्थानी निबंधकार कमलकिशोर पींपलवा ने की। इस दौरान डायरी विद्या पर संगरिया से आए डॉ. गौरीशंकर निमिवाल ने चार प्रसंग सुनाए। कृषि विश्वविद्यालय उप-निदेशक हरिशंकर आचार्य ने रेखाचित्र विद्या पर की गई प्रस्तुति ने राजस्थानी भाषा में एक नया अध्याय जोड़ा। तृतीय सत्र व समापन समारोह में साहित्यकार व राजस्थानी भाषा समन्वयक मधु आचार्य आशावादी ने कहा कि अब राजस्थानी के युवा लेखकों को समझ के साथ लिखते हुए आगे बढ़ना चाहिए, न तो रुकना चाहिए और न ही पीछे हटना चाहिए। साहित्यकार अरविंद आशिया ने कहा कि लेखक एक सामान्य नहीं, बल्कि हजारों लोगों की आवाज है। अकादमी सदस्य साहित्यकार भंवरसिंह सामौर ने कहा कि युवा रचनाकारों को मायड़ भाषा में लिखते देख बुढ़ापा सुधर गया। संस्थान के किशोर सैन, कमलनयन तोषनीवाल, सुमनेश शर्मा, दिनेश स्वामी, रामचंद्र आर्य, एचसी जॉर्ज, बृजदान सामौर, उम्मेदसिंह शेखावत, सूर्य प्रकाश सिंह मावतवाल, मर्यादानाथ, वीणा भोजक, चंद्रशेखर सेवग ने अतिथियों का स्वागत किया। श्रीराम कौशिक ने आभार जताया। संचालन पूनमचंद सारस्वत ने किया।

कन्हैयालाल सेठिया को समर्पित किया सम्मेलन

सम्मेलन के समापन पर अकादमी के प्रतिनिधि ज्योतिकृष्ण वर्मा, लेखाकार अमित कुमार, सावरथिया सेवा सदन के जीवन कुमावत, मोहन पुरी, रोशन बाफना, परवीना भाटी, पुनीत रंगा, अनुराग हर्ष, निशा आर्य, विनीता शर्मा, सुधा सारस्वत, हरिओम तरंग मेड़ता, भंवरलाल जांगिड़, बजरंगलाल जेठू आदि को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मेलन के सभी सत्रों में राजस्थान भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाए जाने को लेकर भी चर्चा की गई तथा मरूदेश संस्थान के राजस्थानी भाषा मान्यता पत्र संकल्प अभियान के तहत प्रधानमंत्री को पोस्टकार्ड भी लिखे गए। सम्मेलन को महाकवि कन्हैयालाल सेठिया को उनके जन्मशताब्दी वर्ष पर समर्पित किया गया।

■ दो दिवसीय युवा लेखक सम्मेलन सम्पन्न

राजस्थानी कविता, कहानी व कथेतर साहित्य पर चर्चा

साहित्यकारों के संगम में सकारात्मक विमर्श

■ डीएनआर रिपोर्टर बीकानेर

सालासर में मंगलवार को युवा लेखक सम्मेलन के समापन अवसर पर मौजूद साहित्यकार एवं कवि।

साहित्य अकादमी दिल्ली व मरु देस संस्थान की ओर से आयोजित युवा लेखक सम्मेलन मंगलवार को सालासर में सम्पन्न हुआ। मरु देस संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने बताया कि तीन सत्रों में संपन्न समारोह का प्रथम सत्र श्रीगंगानगर के युवा साहित्यकार सत्यपाल जोईया की अध्यक्षता में हुआ। इसमें जैसलमेर से आए युवा कवि राम लखारा विपुल ने राजस्थानी गजल 'मन म्हारो उड़तो कागद हो, पेपर वैट जियां है थारी नैण उथारी व ओ लूणी रे' गीत से श्रोताओं का मन मोह लिया। तो वहीं नोहर के युवा कहानीकार शिव बोधि ने 'काक'कहानी से ग्रामीण परिवेश की व्यथा को खोलकर कर रख दिया। इस सत्र की तीसरी प्रस्तुति सुजानगढ़ के युवा कवि अरविंद विश्वेंद्रा ने 'चिड़कली मत आइजे रे...' गीत से की। बेटियों की महत्ता को बताता यह गीत श्रोताओं ने खूब पसंद किया। राजस्थानी भाषा के कथेतर साहित्य पर केन्द्रीत द्वितीय सत्र कालू के राजस्थानी निबंधकार कमलकिशोर पीपलवा की अध्यक्षता में हुआ। इस दौरान डायरी विधा पर संगरिया से आए, डॉ. गौरीशंकर निम्मिवाल ने चार प्रसंग सुनाए। वहीं कृषि विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक हरिशंकर आचार्य ने रेखाचित्र विधा पर प्रस्तुति से राजस्थानी भाषा में एक नया अध्याय जोड़ दिया। तृतीय सत्र युवा लेखक सम्मेलन का समापन समारोह के रूप में आयोजित हुआ। इस सत्र के अध्यक्ष साहित्यकार व राजस्थानी भाषा के समन्वयक मधु आचार्य आशावादी ने कहा कि यह सम्मेलन एक अच्छा प्रयोग साबित हुआ है। अब राजस्थानी के युवा लेखकों को समझ के साथ लिखते हुए आगे बढ़ना चाहिए, ना तो रुकना चाहिये और ना ही पीछे हटना चाहिए। इस दौरान समाहार वक्तव्य देते हुए संस्थान के अध्यक्ष डॉ घनश्याम नाथ कच्छावा ने युवाओं द्वारा अपनी मातृ भाषा में लिखने की सराहना की। वहीं समारोह में जुड़े सहयोगियों, लेखकों व प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान साहित्यकार अरविंद आशिया ने कहा लेखक कॉमन मैन नहीं बल्कि हजारों लोगों की आवाज है। वहीं अकादमी सदस्य साहित्यकार भंवरसिंह सामौर ने कहा कि युवा रचनाकारों को मायड़ भाषा में लिखते देख बड़ी प्रसन्नता हुई। संचालन पूनमचंद सारस्वत ने किया। आभार श्रीराम कौशिक ने व्यक्त किया।

इनका हुआ सम्मान

युवा लेखक सम्मेलन में अकादमी के प्रतिनिधि ज्योतिकृष्ण वर्मा, लेखाकार अमित कुमार, सवरिया सेवा सदन के जीवन कुमावत, मोहन पुरी, रोशन बाफना, परमीना भाटी, पुनीत रंगा, अनुराग हर्ष, निशा आर्य, विनीता शर्मा, सुध सारस्वत, हरिओम तरंग मेहता, भंवरलाल जांगिड़, बजरंग लाल जेठू आदि को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राजस्थानी भाषा की मान्यता की मांग ने पकड़ा जोर...

इस समारोह के दौरान मरु देस संस्थान के राजस्थानी भाषा मान्यता पत्र संकल्प अभियान के तहत प्रधानमंत्री को पोस्ट कार्ड लिखे गए। समारोह के सभी सत्रों के लेखकों ने राजस्थानी भाषा की मान्यता पर चर्चा की। उल्लेखनीय है कि यह युवा लेखक सम्मेलन महाकवि कन्हैयालाल सेठिया को उनके जन्मशताब्दी वर्ष पर समर्पित किया गया।

इन्होंने किया स्वागत

समारोह में अतिथियों का स्वागत संस्थान के किशोर सैन, कमलनयन तोषनिवाल, सुमनेश शर्मा, दिनेश स्वामी, रामचंद्र आर्य, एच.सी. जैन, बृजदान सामौर, उम्मेदसिंह शेखावत, सूर्य प्रकाश सिंह मंगावत, मर्यादा नाथ, दीपा भोजक, चन्द्रशेखर सेवग आदि ने किया।